इतिहास, कक्षा की चारदीवारी के बाहर : एक विद्यार्थी के अनुभव

नन्दन संक्रान्ति कौशिक

सीखने का मतलब है कुछ नया ज्ञान हासिल करना। कभी हमें यह बताया जाता है कि क्या सीखना है और कभी उसे हमारे ऊपर ही छोड़ दिया जाता है और कभी हम ख़ुद ही किसी चीज़ के बारे में सीखने का निर्णय लेते हैं और उसका ज्ञान हासिल करते हैं। वर्तमान दुनिया में कक्षा एक ऐसी जगह है जहाँ पर औपचारिक तौर पर शिक्षा दी जाती है, जो भी उनसे पहले घटित हुआ है उसके बारे में विद्यार्थियों को शिक्षित किया जाता है, ताकि उन्हें आस-पास की दुनिया के लिए तैयार किया जा सके, जिससे वे उस दुनिया में जाएँ और भविष्य में उसे बदल सकें।

हालाँकि, औपचारिक शिक्षा से दुनिया को देखने का एक मुकम्मल नज़रिया हासिल नहीं हो पाता। सिद्धान्त, व्यावहारिक शिक्षा के ऊपर भारी पड़ जाते हैं। असल में जो भी हम सीखते हैं, कभी-कभी उसका एक बहुत बड़ा हिस्सा कक्षा के बाहर ही होता है। कक्षा के बाहर का दायरा तो पूरे संसार में फैला हुआ है और यही तो है जिसमें दाख़िल होने के लिए स्कूल में हमें तैयार किया जाता है। सो उसमें धकेले जाने से पहले ही, उसका थोड़ा-सा स्वाद चख लेना हमारी तैयारी को बेहतर ही बनाता है। यहाँ पर मैं कक्षा के बाहर सीखने के अपने अनुभवों को प्रस्तुत कर रहा हूँ।

मुझे इतिहास विषय में दिलचस्पी है। प्राचीन कलाकृतियों, पुरातन इमारतों, खण्डहरों, पुराने अभिलेखों और बीते ज़माने की चीज़ों के साथ मेरा एक ख़ास लगाव है। अगर यह चीज़ आज के समय की नहीं है तो फिर शायद मेरी इसमें दिलचस्पी होगी ही! हालाँकि अतीत हर किसी के पसन्द की चीज़ तो नहीं होता। मैं तो यह भी कहूँगा कि इतिहास एक ऐसा विषय है जिससे कुछ लोग नफ़रत करते हैं, लेकिन उसकी वजह है इसे पढ़ाने का तरीक़ा। हालाँकि इतिहास के कुछ बहुत ही शानदार अध्यापक भी हैं जो विषय को जीवन्त बनाने में सक्षम हैं, जो आँखों के सामने नक़्शा-सा खींच देते हैं और उसकी बहुत ही सुन्दर ढंग से व्याख्या करते हैं, लेकिन दुखद सच्चाई यह है कि जितने लोगों से मैं मिला हूँ उनमें से ज़्यादातर लोगों को इतिहास के ख़राब शिक्षक मिले जिन्होंने इस विषय में उनकी दिलचस्पी को हमेशा के लिए ख़त्म कर दिया। ऐसे एक शिक्षक से मेरा भी वास्ता रहा है, हालाँकि मेरे स्कूल में इतिहास विषय के ज़्यादातर शिक्षक थे। लेकिन कभी-कभार ऐसे शिक्षक भी होते थे जिन्हें केवल किताब में से पढ़ाना आता था, जिन्हें विषय का वास्तविक ज्ञान नहीं था, जो विद्यार्थियों को सिर्फ़ किताब में से प्रश्न-उत्तर लिखने का काम देते थे और इन्हीं शिक्षकों ने विषय को बरबाद किया था। ख़ैर, स्कूल की तरफ़ से हुए सारे नुकसान के बावजूद, मैंने क्लास के बाहर जो सीखा उसकी वजह से विषय के प्रति मेरा लगाव कम नहीं हुआ।

इससे पहले कि इतिहास में मेरी रूचि को स्थायी रूप से कोई नुकसान पहुँचता, नौवीं कक्षा में मेरा परिचय स्थानीय इतिहास से हुआ। जिसकी शुरुआत कूवम के सांस्कृतिक मानचित्रण से हुई। कितने लोगों को पता होगा कि कूवम नदी, जो अब लगभग एक नाला भर रह गई है, को एक समय पर चेन्नई की पवित्र नदी माना जाता था, जिसके तटों पर एक हज़ार साल से ज़्यादा पुराने मन्दिरों के अवशेष हैं? फिर वहाँ से मैं अड्यार के सांस्कृतिक मानचित्रण की दिशा में आगे बढ़ा। इसी बीच फ़ेसबुक के एक ग्रुप 'मद्रास लोकल हिस्ट्री ग्रुप' द्वारा पोस्ट की गई तस्वीरों और बेहद दिलचस्प जानकारियों के कारण इस विषय के प्रति मेरा खिंचाव और बढ़ गया।

फिर जैसे-जैसे मैंने पैदल यात्राओं, वार्ताओं और विरासत यात्राओं में हिस्सा लेना शुरू किया, स्थानीय इतिहास के साथ मेरा जुड़ाव बढ़ता गया, यहाँ तक कि मैंने ख़ुद भी कुछ पैदल-यात्राओं का प्रबन्ध करने में मदद की। इन शुरुआती दौरों में हमने बुनियादी जानकारियाँ इकट्ठी की, उस सारे मार्ग पर घूम-फिरकर देखा, इस बात का पता लगाया कि किन जगहों के लिए अनुमति लेनी होगी, उस हिसाब से यह तय किया कि किन-किन जगहों पर जाना है, उसके बारे में लोगों को जानकारी दी, और फिर कार्यक्रम वाले दिन लोगों को यात्रा पर ले गए। एक पत्रकार और इतिहासकार निवेदिता लुई के साथ मिलकर मैंने दो बार ऐसा किया।

इस सारे कुछ का संचालन करते हुए और उसमें हिस्सा लेते हुए मुझे इस बात का अन्दाज़ा हुआ कि जिस दौरान देश और दुनिया भर में बहुत कुछ घटित हो रहा था उस समय मेरे अपने शहर, चेन्नई, में आख़िर चल क्या रहा था, और साथ ही शहर के ऐतिहासिक महत्त्व को भी जाना। मिसाल के लिए जब शाहजहाँ की ताजपोशी हो रही थी, मद्रास शहर को उस वक्त चन्द्रगिरी के राजा से ख़रीदा जा रहा था। जब लोग भारत में पहली रेलवे लाइन की बात करते हैं, तो मुम्बई-थाणे लाइन की बात ही दिमाग़ में आती है। लेकिन उससे पहले भी मद्रास

में लाल पहाड़ियों से लकड़ी को नीचे लाने के लिए रेलवे का इस्तेमाल किया जा रहा था। रोयापुरम रेलवे स्टेशन देश का सबसे पुराना रेलवे स्टेशन है जो आज तक बचा हुआ है। भारत में लिफ्ट वाले सबसे पहले होटलों में से एक चेन्नई में था, जिसे बाद में बाटा के शो-रूम में बदल दिया गया था और पिछले साल व्यावसायिक हितों के लिए उसे गिरा दिया गया। इससे मुझे यह भी सीखने को मिला कि कैसे हमारी अज्ञानता की वजह से शहर में विरासत को उजाड़ा जा रहा है और मैंने यह भी जाना कि उसे रोकने के लिए कितनी कम कोशिशें हो रही हैं।

स्थानीय इतिहास के अलावा मैं अपने दादाजी के इकट्ठे किए प्राचीन सिक्कों के भण्डार, जिसे अब मैं धीरे-धीरे बढ़ा रहा हूँ, का भी शुक्रगुज़ार हूँ, जिससे मैंने मुद्राशास्त्र के बारे में सीखा। सिक्कों के मेलों में हिस्सा लेने, कई सदियों के दौरान ढाले गए तरह-तरह के सिक्कों के बारे में खोज करने, उनके अंकित मूल्य और सापेक्ष-मूल्य, इन सबसे मुझे पुरानी अर्थव्यवस्थाओं और अतीत में पैसे की पेचीदगियों को समझने का मौक़ा मिला। इसके साथ ही मुझे यह भी पता चला कि कैसे सिक्के हमारे समय का प्रतिनिधित्व करते हैं, उकेरी हुई चीज़ों और भाषा के ज़रिए। सिक्के और धातु दोनों के ही मूल्य से, और साथ ही उसकी आज की क़ीमत से, पता लगा सकते हैं कि राज्य आर्थिक रूप से कितना शक्तिशाली और कितना ख़ुशहाल था।

हेरिटेज वॉक के दौरान जब मैं पुराने और प्राचीन मन्दिरों में गया तो मैंने देखा कि मेरे भीतर उनकी दीवारों पर उकेरे गए लेखन में एक रुचि पैदा हो रही है। उनमें कहा क्या गया है, इसका पता लगाने के लिए मैंने आरईएसीएच फ़ाउंडेशन से एपिग्राफ़ी का कोर्स किया। चौदह रविवार और दो प्राचीन मन्दिरों की यात्राओं के बाद, अब मैं तमिल अभिलेख पढ़ सकता हूँ, पाँचवी ईसा-पूर्व पुरानी तमिल ब्रह्मी जो शिलालेखों और बर्तनों के टुकड़ों पर मिलती है, से लेकर पल्लव, चोल और विजयनगर के समय तक के तमिल अभिलेखों को भी, और उसे भी जिसे आमतौर पर मन्दिरों की दीवारों पर पाया जाता है, यहाँ तक कि ब्रिटिश युग के तमिल अभिलेखों को भी जो तक़रीबन दो सौ साल पुराने हैं।

भले ही मेरी मुख्य दिलचस्पी इतिहास में हो, लेकिन पढ़ना भी मेरा पसन्दीदा शौक़ रहा है। आप मेरी ख़ुशी का अन्दाज़ा नहीं लगा सकते, जब मैंने 200 साल पुरानी मद्रास लिटरेरी सोसाईटी को ढूँढ़ निकाला। यह ईस्ट इंडिया कम्पनी में काम करने वाले लोगों द्वारा 1812 में बनाई गई एक ऐसी लाइब्रेरी है जिसमें 55,000 हज़ार से ज़्यादा किताबें हैं। इस लाइब्रेरी में 400 साल से भी ज़्यादा पुराने समय तक की किताबें हैं और यह एक विरासती इमारत में स्थित है। मैं बीच–बीच में वहाँ जाता रहता हूँ पहले किताबों की इंडेक्सिंग करने और पुस्तक सूची तैयार करने में उनकी मदद के लिए जाता था और अब उनका इंस्ट्राग्राम पेज चलाने में उनकी मदद करता हूँ। मद्रास लिटरेरी सोसाईटी में वॉलंटियर के तौर पर काम करते हुए मुझे इस तरह के साहित्य और पत्रिकाओं के बारे में जानने का मौक़ा मिला जो बहुत समय पहले चलन में रहे थे, उनसे मुझे औपनिवेशिक जीवन की एक झलक देखने को मिली। मैंने चेन्नई के वार्षिक साहित्य उत्सव 'लिट्रेचर फार लाइफ़" के दौरान एमएलएस के स्टाल पर स्वेच्छा से काम किया है। इससे मुझे कई सारे लेखकों से बातचीत करने का मौक़ा मिला जो शायद वैसे नहीं मिल पाता, और साथ ही मुझे यह सीखने का मौक़ा भी मिला कि किसी प्रोग्राम में स्टाल को कैसे चलाया जाता है, एक ऐसा हुनर जिसकी आने वाले जीवन में ज़रूरत पड़ सकती है।

इस सब के दौरान, मुझे अकेले ही कई जगहों पर जाना पड़ा, जिससे जगहों की लोकेशन और भूगोल के मामले में मेरी समझ गहरी और स्पष्ट हुई। मैंने कहीं भी आने-जाने के लिए यातायात के सार्वजनिक साधनों का ही इस्तेमाल करना शुरू किया, जिसका अर्थ था कि मुझे दिशाओं और रास्तों को तेज़ी से समझना था।

क्लास के बाहर मैंने जो भी किया है उसका बड़ा हिस्सा अनौपचारिक ही रहा है (मेरी एपिग्राफ़ी क्लासों को छोड़कर)। हालाँकि उन सबमें एक साझी बात यही रही है कि उन्हें पूरी दिलचस्पी से किया गया था। प्रेरणा बिल्कुल भीतर से थी। पब्लिक ट्रांसपोर्ट से सफ़र करने का फ़ैसला हो सकता है बहुत बड़ा न लगे, लेकिन उससे मैंने सम्प्रेषण, अलग-अलग टिकटों की क़ीमतें, दूरियाँ, समय, समायोजन और स्थिति के अनुसार ढलना सीखा, साथ ही स्वतंत्रता का एक अहसास भी मिला। कक्षा में तो बस एक संरचनात्मक ढाँचे में एक तय समय के भीतर कुछ चीज़ों को सीखना होता है। इंटर्नशिप, स्वैच्छिक कार्य, यहाँ तक कि व्यक्तिगत प्रोजेक्ट, यह सभी, दुनिया को देखने-समझने की एक स्वतंत्र दृष्टि प्रदान करते हैं। अगर आप कक्षा से बाहर निकलते हैं, और ख़ुद ही खोजना शुरू करते हैं, तो फिर सम्भावनाएँ अनन्त हैं।

नन्दन संक्रान्ति कौशिक अड्यार के एक छात्र हैं, जो 'शिष्या' से हाल ही में पास होकर निकले हैं। वे यात्राओं, मुद्राशास्त्र, इतिहास और लेखन में रुचि रखते हैं। अब वे अशोका विश्वविद्यालय से अंडर-ग्रैजुएट की डिग्री हासिल करने के लिए दिल्ली जा रहे हैं। उनसे *nandansankranti.k@gmail.com* पर सम्पर्क किया जा सकता है

अनुवाद : बलराम बोधि **पुनरीक्षण** तथा **कॉपी एडीटिंग** : स्वाति भदौरिया